प्रश्नोत्तर

श्री ओमप्रकाश कश्यप,

प्रश्न– ज्ञान तत्व अंक तिहत्तर प्राप्त हुआ। इस अंक ने अन्य अंकों की अपेक्षा कुछ अधिक ही प्रभावित किया है। आपकी संघर्ष क्षमता के साथ–साथ वैचारिक शक्ति भी विलक्षण है। इससें निराशा के घने बादलों में आशा की कुछ किरण दिख रही है। हम आपके इस प्रयत्न में क्या सहयोग कर सकते है? आगे की योजना क्या है?

उत्तर– ज्ञानतत्व कई वर्षो से निकल रहा है। इसकी गणना भारत के गिने चुने वैचारिक पाक्षिकों में होने लगी है। यद्यपि इसके पाठकों की संख्या अब भी करीब पंद्रह सौ ही है किन्तु गुणवत्ता की दृष्टि से पाठकों में बहुत परिवर्तन हुआ है। पाठकों की गुणवत्ता के आधार पर ही ज्ञानतत्व की गुणवत्ता का भी विकास स्वाभाविक ही है। अत हम यदि क्रमशः अधिक गंभीर सामग्री आप सबको दे पा रहे है। तो इसका सारा श्रेय आप जैसे पाठको का ही है।

ज्ञान तत्व के माध्यम से आप सबसे विचार मंथन के साथ तीस जनवरी से देश के हिन्दी भाषा कुछ प्रदेशों की वाहन यात्रा भी की गई। यात्रा से प्रत्यक्ष संवाद तथा विचार मंथन को गति मिली। अधिकांश स्थानो पर मीडिया ने भरपूर सहयोग किया। इस यात्रा से काफी लाभ हुआ। किन्तु इस यात्रा के बाद एक बात समझ में आई कि बिना योजना के अकेले के प्रयास से परिणाम प्राप्त नही हो सकता। हमें मिलजुलकर टीम भावना विकसित करनी चाहिये।

देश भर के बहुत लोग हमारे इस अभियान से जुडना चाहते है। किन्तु अब तक हम लोग साथियों से ठीक संवाद नही कर पा रहे थे। इस संबंध में पहली बार एक विचार बना है। जो सूची हम आप सब पाठको तक भेज रहे है। वह वैसा ही प्रयास है जैसा भगवान राम ने समुद्र बनाते समय अपने वानर कार्यकर्ताओं से पूछकर किया था कि आप अपनी क्षमता अनुसार क्या कर सकते है। नल नील, हनुमान छोटे बन्दर और गिलहरी का अपना अपना स्वयं का आकलन और तदानुसार कार्य था। हम इस ड्राफट के माध्यम से कुछ बिन्दु दे रहें है। आप सुझाव दें कि इसमें क्या क्या कर सकते है? आपके उत्तरों के बाद अन्य साथियों के पास भी सूची जायगी। इस स्ची में प्रत्येक कार्य के साथ उसके मूल्यांकन के लिये अंक तालिका भी दी गई। आप कार्य के महत्व का तुलनामत्क विवेचन करके अंक तालिका के संबंध में भी अपनी सलाह देने का कष्ट करें।

कमांक	**कार्य**	**अंक**
————	———	————

फार्म भरवाना

(क) आपके गांव वार्ड या मुहल्ला से दस ऐस
नाम पत्ते भरकर भेजना जो राजनीति पर समाज
के अंकुश की योजना से सहमत हो। –2

(ख) अपने विधान सभा क्षेत्र से दस ऐसे नाम
पत्ते भरकर भेजना जो अपने गांव, वार्ड या मुहल्ला के
दस नाम पत्त भरवाकर भेजने हेतु सहमत हो। –4

(ग) अपन लोक सभा क्षेत्र से दस ऐसे नाम पत्ते भरकर भेजना जो
ऐसे दस अन्य पत्ते भेज सके जो इस क्रम को गाँव
तक पहुँचा सके। –6

मीटिंग कराना

(क) अपने क्षेत्र में लोक स्वराज्य मंच की एक मीटिंग या आम सभा
का आयोजन करना या कराना (किसी भी अन्य संस्था से) जिसमें न्यूनतम उपस्थिति पचास से अधिक की संभावित हो।
–20 –20

(ख) कोई ऐसी बैठक की व्यवस्था करना जिसमें उस लोकसभा के भिन्न
क्षेत्रों से बीस लोग आ सकते हा तथा जिसमें कार्यक्रम विस्तार को योजना बन सके।
–20

(ग) कोई ऐसी बठक जिसमें पांच लोक सभा क्षेत्रों के बीस कार्यकर्ता भाग

ले सकें तथा जिसमें कार्यक्रम विस्तार की योजना बन सके। –20

मीटिंगो में भाग लेना

(क) किसी ऐसी बैठक मे वर्ष में एकबार सम्मिलित होना जो अधिकतम एक हजार कि.मी.की हो। –12

(ख) किसी एसी बैठक में वर्ष में एक बार सम्मिलित होना जो आपने पांच लोक सभा क्षेत्रों के अन्दर हो। –4

(ग) किसी ऐसी बैठक में वर्ष में एक बार सम्मिलित होना जो आपनी लोकसभा के अन्दर हो। –2

ज्ञान तत्व

पूरे भारत में कही से भी ज्ञान तत्व के दस वार्षिक ग्राहक बनाना। वार्षिक शुल्क पचास रूपया। –10

ज्ञानयज्ञ

(क) ज्ञान यज्ञ मण्डल के लिये एक संरक्षक सदस्य बनाना संरक्षक सदस्य एक वर्ष की सदस्यता हेतु एक हजार रूपया की सहायता करता है। इस संग्रह से ज्ञान यज्ञ मण्डल तथा लोक स्वराज्य मंच के केन्द्रीय कार्यालय व्यय की व्यवस्था हागी। –15

,(ख) अपने क्षेत्र में दो से लेकर तीन दिन तक का ज्ञान यज्ञ आयोजन। इसमें आधे घंटे के यज्ञ पश्चात निश्चित विषयों पर तीन तीन घंटों का स्वतंत्र विचार मंथन होगा। –20

साहित्य विकय

(क) स्वयं या किसी के माध्यम से वर्ष में एक हजार रूपये का साहित्य बिकी कराना (कमीशन शून्य)। –20

(ख) स्वयं या किसी के माध्यम से वर्ष में एक हजार रूपये का साहित्य बिको कराना (कमीशन 30 प्रतिशत)। –10

पोस्टर कैलेन्डर नारा लेखन

(क) अपनी लोक सभा क अन्तर्गत भिन्न भिन्न क्षेत्रों में पच्चीस पोस्टर खरीदकर लगवाना (मूल्य प्रत्येक दो रूपया)। –4

(ख) अपने शहर या गाँव में पंद्रह पोस्टर खरीदकर लगवाना। –2

(ग) दस कैलेन्डर खरीदकर बिकवाना या बंटवाना (मूल्य प्रत्येक पांच रूपया)। –3

(घ) अपने क्षेत्र में दस नारे लिखना या लिखवाना। –3

(च) लोक सभा के भिन्न भिन्न विधान सभाओं में दस नारे लिखना या लिखवाना। –5

मीडिया प्रबंधन

(क) अपने क्षेत्र में लोक स्वराज्य मंच की पत्रकार वार्ता। –10

(ख) किसी टी.वी. चैनल पर कोई साक्षात्कार प्रसारित कराने की व्यवस्था जो राष्ट्रीय स्तर पर प्रसारित होता हो। –25

ज्ञान यज्ञ मण्डल

अपनी लोक सभा में से ज्ञान यज्ञ मण्डल के विचार मंथन के लिये एक ऐसा नाम प्रस्तावित करना जो।

(क) समाज के यथार्थवादी माना जाता हो।

(ख) धूर्त, अपराधी स्वार्थी मूर्ख, की छवि न हो।

(ग) विचार प्रधान हो।

(घ) तटस्थ व्यक्ति माना जाता हो।

पूँजीवाद, साम्यवाद और बेचारा श्रम

बजरंगलाल अग्रवाल

आय के तीन श्रोत माने जाते है– 1.श्रम 2.बुद्धि 3.धन। श्रम की आय क्षमता अत्यन्त ही सीमित है जबकि बुद्धि की आय क्षमता श्रम की तुलना में कई गुना अधिक है और धन जब बुद्धि के साथ जुड जाता है तो वह उसकी आय क्षमता में कई गुना और अधिक विस्तार कर देता है श्रम की आय क्षमता पच्चीस रूपये से लेकर अधिकतम सवा सौ रूपये प्रतिदिन तक है जबकि बुद्धि की आय क्षमता की काई सीमा नही हैं। वह प्रतिदिन हजार भी कमा सकता है और पांच हजार भी किन्तु धन की आय क्षमता तो गुणात्मक परिणाम देती है बुद्धि और धन मिलकर प्रतिदिन लाखों तक की आय कर सकते है।

श्रम और बुद्धि की आय क्षमता को एक करना संभव नहीं क्योंकि श्रम प्रधान के पास बुद्धि आय सहायक नही होती किन्तु बुद्धि प्रधान के पास बुद्धि के साथ साथ श्रम भो आय सहायक होता है फिर भी मानवीय आधार पर श्रम का मूल्य लगातार लम्बे समय तक उपेक्षा की जाये तो समाज का संतुलन बिगड सकता है। क्योंकि भारत में श्रम प्रधान लोगों की संख्या बुद्धि प्रधानों से कई गुना अधिक है।

समाज में श्रम का क्या स्थान हो श्रम को उचित सम्मान कैस मिले श्रम को मानवीय आधारों के साथ कैसे जोडा जाय, इस सबंध में दुनियाँ में दो विचार धाराएँ काम कर रही है–1.पूँजीवाद और 2. साम्यवाद। दोनों ही श्रम जीवियों के स्तर सुधार की वकालत करती है और योजनाऍं भी बनाती है किन्तु पिछले पचपन वर्षो से भारत में तो लगातार श्रम और बुद्धि की आय क्षमता में असमानता बढ रही है। सन सैतालीस में समाज में श्रम का जो सम्मान था वह कम हुआ है। बुद्धि प्रधान तथा धन प्रधानों के जीवन स्तर आय क्षमता तथा सामाजिक सम्मान में जो बुद्धि हुई है उसके अनुपात में श्रम जीवियों के जीवन स्तर आय क्षमता तथा सामाजिक सम्मान में वृद्धि नगण्य सी ही है। लोग मजबूरी में श्रम करना चाहते है अन्यथा श्रम करने की अपेक्षा बेरोजगार रहना अधिक पंसद करते है क्योंकि श्रम उन्हें किसी भी रूप में संतुष्ट नही कर पाता।

पूँजीवाद ने हमेशा श्रम को शाषण किया है। उसने श्रमजोवियों का मनुष्य न मानकर वस्तु मान लिया जो या तो उत्पादन सहायक वस्तु है या उनकी सुख सुविधा का सहाय बाजार मूल्य पर पूरी स्वतंत्रता से अधिक से अधिक काम लेना और न्यूनतम मजदूरी देना पूँजीवाद का सिद्धान्त है क्योंकि श्रम शोषण ही राष्टोय आय वृद्धि में सहायता होता है तथा वही उनके स्वयं की प्रगति में सहायक है। पूँजीवाद ने श्रम शोषण के लिये बुद्धि का भरपूर उपयोग किया अनेक प्रकार की मशीने बनाई गई और मशीनों के उपयोग के लिये मानव श्रम क विकल्प के रूप में कृतिम उर्जा का आविष्कार किया लघु उद्योगों को अलाभकर व्यवसाय में परिवर्तित कर बडे–बड उद्याग धन्धों को प्रोत्साहित किया हाई टेक्नालाजी को इतना आगे बढाया गया कि उसने देश के उत्पादन में भी खूब वृद्धि की और सविधाओं में भी बढोत्तरी की किन्तु श्रम की मांग और मूल्य पर उसका लगातार विपरीत असर पडा।

पूँजीवाद के विरूद्ध श्रम सहायक के रूप में साम्यवाद सामने आया। साम्यवाद से बहुत उम्मीदें थी कि वह श्रम सहायक होगा। किन्तु साम्यवाद पूरी तरह ऐसी नीति पर चला जिसका सम्पूर्ण लाभ छद्म श्रम जीवियों के खाते में चला गया पूँजीवाद पर सफल नियंत्रण किया किन्तु उसका नगण्य लाभ ही श्रम जीवियों तक पहुँचने दिया। बाकी सारा लाभ ये नकली श्रमजीवी उठाने लगे। पूरे भारत में साम्यवादी व्यवस्था ने श्रम प्रधानों और नकली श्रमजीवियों के बीच आय का अन्तर दस गुना तक कर दिया एक दो प्रतिशत लोगों ने सारा का सारा लाभ उठा लिया। इस व्यवस्था के कारण पूंजीपतियों का लाभ इन बीच वालों में बटने लगा। स्वतंत्र व्यवसाय के स्थान पर राष्टोय करण किया गया जिसमें इन नकली श्रमिको को बेशुमार वेतन और 1 सुविधाएँ दी गई। अधिकांश उद्योग घाटे में गये जिसकी पूर्ति के लिये और टैक्स लगाये गये। ऐसे किसी भी सरकारी उद्योग में न तो वास्तविक श्रमिकों को काम मिला न ही उनका श्रम मूल्य बढा। सिर्फ एक दो प्रतिशत लोग उँची–उँची तनख्वाहों में भर्ती हो गये। नियुक्ति से लेकर काम तक भारी भ्रष्टाचार और निकम्मापन छा गया जिसे रोकने के नाम पर और लोग भर्ती हुए जिन्होने और अधिक भ्रष्टाचार किया। एक ओर तो साम्यवाद ने उद्योग धन्धों का उत्पादन गिराया दूसरी ओर वास्तविक श्रम मूल्य को बढने ही नही दिया। पूँजीवाद ने यदि श्रम शोषण प्रत्यक्ष दिखाई देता है किन्तु साम्यवाद का श्रम शोषण पूरी तरह श्रम हितैषी बनकर धोखा करता है पूँजीवाद में पूँजीपतियों ने पूँजी के बल पर श्रम शोषण किया है तो साम्यवाद ने बुद्धि क बल पर श्रम के साथ छल किया है।

हमारे क्षेत्र में मैं प्रत्यक्ष देख रहा हूँ कि पिछले पचास वषा की साम्यवाद प्रभावित अर्थ व्यवस्था में सामान्य श्रमिक का श्रम मूल्य पैंतीस रूपया रहा तो सरकारी कार्यालय के चपरासी को दो सौ रूपया। एक स्वतंत्र स्कूल के शिक्षक को भी पैतीस रूपया प्रतिदिन इन लोगों ने श्रम को धोखा देने के लिये एक नकली श्रम मूल्य में बहुत अन्तर है। एक ओर तो इस नकली श्रम मूल्य ने वास्तविक श्रम मूल्य की वृद्धि भी रोक दी क्योंकि बिल्कुल साधारण सिद्धान्त है कि जब किसी वस्तु का मूल्य बढता है तो मांग घटती है और जब मांग घटती है तो मूल्य घटता है। श्रम मूल्य में सरकारी वृद्धि ने श्रम मूल्य पर पडा और उसकी मूल्य घटा। बिल्कुल स्पष्ट है कि साम्यवाद या समाजवाद के नाम पर पूँजीवाद के लाभ नकली श्रमजीवियों छीन लिया और दोनों हो स्थितियों में वास्तविक श्रम जीवी उपेक्षित ही रह गया।

श्रम मूल्य वृद्धि पूँजीपतियों के लिये भी सिरदर्द है और बुद्धिजीवियों के लिये भी जब भी कृत्रिम उर्जा की मूल्य वृद्धि की बात आती है तो वह साम्यवादियों को भी कांटे की तरह चुभती है तो पूँजीवाद को भी। दोनों ही समान रूप से इकार विरोध करते ह। कृत्रिम उर्जा मूल्य और वास्तविक श्रम मूल्य के बीच बिल्कुल सीधा सम्बन्ध है। समाज में श्रम की मांग बढे बिना श्रम मूल्य बढ ही नहीं सकता यह बात बिल्कुल साफ होते हुए भी हमारे तथा कथित मित्रों को क्यों नही दिखती। पूँजीवाद तो अपने स्वार्थ में अन्धे है। किन्तु साम्यवादी या समाजवादी ठीक ऑख रखकर भी इस सत्य को नही देख रहे यह दुख का विषय है। श्रम की मांग समाज में बढनी ही चाहिये यही एकमात्र मार्ग श्रम मूल्य वृद्धि का हमारे पास है। इस कार्य के लिये हमें पूँजीवाद और साम्यवाद के भ्रम जाल में मुक्त होना होगा।

श्रमजीवी बेचारा किंकर्तव्य विमूढ है। पिछली भाजपा सरकार ने पूँजीवादी अर्थ व्यवस्था की ओर कुछ कदम बढायें। भ्रष्टाचार के अवसर घटे सरकारी कारखाने एक कर व्यक्तिगत हाथों में चले गये। सरकारी विभागों में बैठ नकली श्रमजीवी जो कम से कम श्रम और अधिक वेतन के लिये ही दिनरात साम्यवादियों या साम्यवाद की चापलूसी करते रहते है। वे बेरोजगार होने लगे बड उद्योग और पूँजीवाद की बन आई। धन का खुला खेल शुरू हुआ। न श्रम की मांग बढो न ही श्रम का मूल्य बढा। श्रम बेचारा वही का वही रहा। अब कम्यूनिष्ट समर्थित कांग्रेस सरकार आई है। पूरी की पूरी अर्थनीति बदली जायगी। नकली श्रमजीवियों को भर्ती किया जायगा। भ्रष्टाचार के अवसर बढेगे। पूँजीपतियों का शोषण होगा। नये कर लगाकर नकली श्रम जीवियों की संख्या भी बढाई जायगी और सुविधा भी। श्रम बेचारा वही रहेगा, जहाँ था क्योंकि वास्तविक श्रम की मांग न तो इन पूँजीपतियों के प्रयत्नों से बढ सकती है न ही इन नकली श्रमजीवियों के प्रयत्नों से वास्तविक श्रम की मांग तो बढगी कुटीर उद्योग से और कुटीर उद्योग बढगे आवागमन मंहगा होने से मशीनी उत्पादन महगा होने से तथा कृत्रिम श्रम मूल्य घटाने से न भाजपा सरकार ने इस दिशा में कुछ किया और न ही वर्तमान सरकार करेगी क्योंकि दोनों में से किसी का उद्देश्य वास्तविक श्रम की मांग बढने के अवसर पैदा करना नहीं है। पूर्ववर्ती सरकार उस पूँजीवादी दिशा में बढ रही थी जिसमें कुछ पूँजीपति श्रम शोषण में लग रहते ह और यह सरकार नकलो श्रमजीवियों के हाथों की कठपुतली है जिसमे संगठित नकली श्रमजीवी वास्तविक श्रमजीवियों के साथ निरंतर छल करते ह। वास्तविक श्रम का न कोई उस समय हितैषी था और न ही अब है। वास्तविक श्रम की चिन्ता करने वालों की एक नई टीम बनाई चाहिये जो पूँजीवाद श्रम की चिन्ता करने वालों की एक नई टीम बननी चाहिये पूँजीवादी श्रम शोषको और साम्यवादी नकली श्रमजीवियों के चंगुल से वास्तविक श्रम की सुरक्षा कर एक अलग अर्थनीति पर देश को आगे बढा सकें।

मैंने इस लेख में जो कुछ लिखा है वह एक गंभीर विषय है। यह तो सिर्फ मेरा विचार है जो अब तक वैसा ही है जैसा पृथ्वी को लगातार चपटी कहने वालों के बीच पृथ्वी गोल कहने वाले वैज्ञानिक का पूँजीवादी लोग तो बहस में उलझते ही नहीं। आर्थिक असमानता उनकी चिन्ता का विषय नहीं अतः मेरा लेख उन्हें बिल्कुल उद्धेलित नही करेगा किन्तु वामपंथी विचारों के लोगों के लिये तो यह लेख चुनौती के समान है पूँजीवाद की आड लेकर वास्तविक श्रम का लगाता शोषण करने का प्रयत्न करने वाले वामपंथी विचारको से तो मुझे उम्मीद करनी चाहिए कि वे इस लेख पर अपने विचार लिखकर विचार मंथन को आगे बढायेगे हमारे पाठक मित्रों को इस लेख के कम से कम चार बिन्दुओं पर अपने विचार स्पष्ट करने चाहिए–

1. कृत्रिम श्रम मूल्य की स्थापना और उसकी वृद्धि वास्तविक श्रम की मांग और मूल्य वृद्धि में घातक है या सहायक?
2. कृत्रिम उर्जा का सस्ता होना राष्ट्रीय स्तर पर श्रम की मांग और मूल्य वृद्धि म सहायक है या बाधक?
3. क्या आपको पता है कि साइकिल पर प्रति साइकिल ढाई सौ रूपया उत्पादन कर लगता है?
4. अनाज, कपडा, दवा, पशुचारा, लघु वनोपज व साइकिल जैसी वस्तुएँ जो श्रम प्रधान लोग अधिक और बुद्धि प्रधान लोग कम उपयोग करते है उन पर भारी कर लगाकर पोस्टकाड आवागमन कृत्रिम उर्जा एवं टेलीफोन आदि वस्तुएँ जो श्रम प्रधान कम और अन्य लोग अधिक उपयोग करते है मंहगा न हाने देने की नीति से आप कितना सहमत है।

प्रश्नोत्तर

श्री रामसेवक गुप्ता, रामानुजगंज, सरगुजा छत्तीसगढ

प्रश्न—लोक सभा चुनावों के बाद सत्तारूढ गठबंधन ने श्रीमतो सोनिया गांधी को भारत का प्रधानमंत्री चुना जिसे एक नाटकीय घटनाक्रम में श्रीमतो सोनिया ने अस्वीकार कर दिया। अटकलों का बाजर गर्म हुआ। कई तरह की सभावनाएँ व्यक्त की गई। कुछ विद्वानों ने इस त्याग को राष्ट्रपति जी के संकेत का परिणाम बताया तो कुछ लोगों ने उमा भारती और सुषमा स्वराज्य के आंदोलन की धमकी का भय। छत्तीसगढ के एक लोकप्रिय दैनिक अम्बिकावाणी ने एक अलग ही कहानी प्रसारित की कि राष्ट्रपति भवन जाने के ठीक पूर्व सोनिया जी ने अटलबिहारी जी से फोन पर इस सम्बन्ध में चर्चा कि जिसमें अटल जी से उन्हें प्रधान मंत्री न बनने की सलाह दी। सोनिया जी का निर्णय अटल जी की सलाह से भी प्रभावित हो सकता है।

दूसरी ओर अनेक लोगों ने सोनिया जी के निर्णय को पूर्णत उनकी त्याग प्रवृति से ओतप्रोत तथा अद्धितीय बताया। कुछ लोगों ने तो सोनिया के त्याग की तलना जयप्रकाश नारायण तक से कर डाली। कुछ लोगों ने सानिया जी के त्याग को राहुल और प्रियंका की सलाह के साथ जोडकर देखा। आप एक यथार्थवादी विचारक है। आपके निष्कर्ष बहुत स्पष्ट और गंभीर होते है आप नीर क्षीर को पृथक करके बताइये कि आपके अनुसार इसमे कौन सी बात सच है?

उत्तर——एक व्यक्ति सज धज कर पूरे उत्साह से विवाह मण्डप में खडा है। सात फेरों की तैयारी चल रही है। एकाएक उसने विवाह से इन्कार कर दिया इन्कार का स्पष्ट आधार पता नहीं है, सिर्फ अटकलें ही लगाई जा सकती है किन्तु उस व्यक्ति के चरित्र की तो एक झलक इस इन्कार से स्पष्ट होती है।

आज से पांच वर्ष पूर्व सोनिया जी प्रधानमंत्री बनने हेतु प्रयत्नशील थीं। वर्तमान लोकसभा चुनाव में प्रधानमंत्री बनने की कोई संभावना नहों होन के कारण सोनिया जी ने कई उत्सुकता नही दिखाई किन्तु चुनावों के बाद उन्हाने अपने सभी कदम प्रधानमंत्री की कुर्सी की ओर ही बढाये। बिल्कुल अन्तिम समय में उन्होने प्रधानमंत्री का पद ग्रहण करने से इन्कार कर दिया। इससे उनकी त्याग भावना तो मानी जा सकती है किन्तु त्याग प्रवृति नहीं। अब तक भारत में त्याग प्रवृति के दो तीन ही उदाहरण मिलते है। यदि हम गांधी जी को छोडकर देखें तो सन सतहतर में जयप्रकाश जी ने त्याग प्रवृति प्रमाणित की थी और बाद में विश्वनाथ प्रताप सिंह जी को जब प्रधानमंत्री पद देने का तय हुआ तो उन्होने प्रारंभ से ही त्याग प्रवृति स्थापित की और अपने निश्चय पर डटे रहे। सोनिया जी के त्याग की तुलना न जयप्रकाश जी के त्याग से की जा सकती है न ही विश्वनाथ प्रताप सिंह के त्याग से। क्योंकि विश्वनाथ जी ने सत्ता के लिये एक बार प्रधानमंत्री बनने के बाद कभी इच्छा प्रकट की ही नहीं नाना जी देशमुख भी कुछ सीमा तक इस श्रेणी में माने जा सकते है।

आम तौर पर लोग सोनिया जी में नेहरू परिवार और भारतीय बहू के गुण देखने लगे है। मेरे विचार में यह पूरी तरह गलत है सोनिया जी में नेहरू परिवार का गुण होता तो वे कभी पद नहीं छोडती गांधी जी के समय में नेहरू जी न अन्य स्वतत्रता सेनानियों की लीक से हटकर सत्ता के लिये राजनीति की ओर इन्दिरा गांधी ने तो न्यायालय के निर्णय तक को अस्वीकार करके पद के लिये देश में आपात्काल लगाया था। सोनिया जी ने यदि ससुराल के पारिवारिक गुण होते तो वे प्रधानमंत्री बनकर आंदोलन कारियों को जेल बन्द करके मरवा देती किन्तु उनमें पारिवारिक सत्ता लोलूपता का अभाव था इसी तरह यह कहना भी पूरी तरह गलत है कि श्रीमतो सोनिया गांधी के विदेशी संस्कार समाप्त होकर स्वदेशी अथात भारतीय हो गये। भारतीय उपमहाद्धीप को छोडकर किसी लोकतात्रिक देश की ऐसी संस्कृति नही जहाँ सत्ता के लिये ऐसे दाँवपेच होते ह। सोनिया जी स्वाभाविक और सामान्य रूप से सत्ता त्याग करके यह प्रमाणित कर दिया कि उनमें अभी भी भारतीय संस्कृति का अभाव हैं राजनीति में तो भारतीय संस्कृति तो त्याग प्रधान रही है और पश्चिम की त्याग और भोग के बीच संतुलन बनाती है किन्तु राजनीति में वर्तमान भारत के संस्कार इस सीमा तक गिर गये है कि यहा राजनीति में सिर्फ भोग ही भोग रह गया है अब हमें अपनी भारतीय संस्कति की लाज बचाने के लिये एक विदेश संस्कारित महिला के त्याग को ढाल बनाना पडा रहा है जबकि मैं पूरी तरह आस्वस्त हूँ कि सोनिया जी में यदि जरा भी भारतीय संस्कार होते तो वे लालू और मुलायम की राह पर चलतीं सुषमा स्वराज्य या उमा भारती जी सहित अनेक भाजपाईयों ने सोनिया के पदत्याग को भय या मजबूरी बताया है। यदि हम मान भी ले कि उन्हें राष्टपति से आभास मिलर या वे सुषमा जी और अन्य भाजपा वालों के आन्दोलन से डर गई तब भी क्या यह बात कम महत्वपूर्ण है कि सोनिया का त्याग कई गुना अधिक बडा है। यदि ठीक ऐसी ही स्थिति उमा जी और सुषमा जी के सामने हाती तो क्या वे इतनी शालीनता से पद छोड देतो क्या भाजपा में ऐसे लोगों की कोई संख्या है जो इतना भी त्याग कर सके सन सतहतर तात्कालीन उपराष्ट्रपति जी ने इन लोगों की सलाह पर कांग्रेसी सरकारों को भंग करने में सिर्फ दो धंटे की देर कर दी थी तो ये सारे सिद्धान्तवादी लोग राष्ट्रपति भवन में धरने पर बैठ गये थे मेरे विचार में सोनिया जी के पद त्याग का

यथार्थवादी नजरों से देखने की आवश्यकता है। वह न तो इतना बडा त्याग है जितना ये चापलूस कांगसी बखान कर रहें है। और न ही इतना तुच्छ जैसा विपक्षी प्रमाणित कर रहे है। सोनिया जी ने यह निर्णय चाहे त्याग भावना के वशीभूत होकर लिया हो अथवा परिस्थिति वश किन्तु उन्हाने भारतीय राजनीति को गरिमा प्रदान की ह जिसकी हमें सराहना करनी चाहिये।
जहां तक सोनिया जी क त्याग का स्तर तय करने का प्रश्न है तो भारतीय राजनीति में पांच स्तर के लोग है 1. अटल जी सोनिया गांधी, विश्वनाथ प्रताप सिंह, मनमोहन सिंह, नारायण दत्त तिवारी, आडवाणी जी नाना जी देखमुख दिग्विजय सिंह आदि 2. मुरली मनोहर जोशी, सुषमा स्वराज्य, शरद पवार डा0 कर्ण सिंह आदि 3. अजीत सिंह उमा भारती भजनलाल, सहित सभी पार्टियों के अन्य कार्यकर्ता जो एक दो और चार पांच की श्रेणी में शामिल नहीं है। 4. लालू प्रसाद, मुलायम सिंह, मायावती, जय ललिता, अजीत जोगी आदि 5.तस्लीमुदीन, शहबुदीन, डी.पी.यादव, तथा अनेक अन्य बाहुबली। निश्चित रूप से सोनिया जी का त्याग पहले क्रम पर आता है।

गांधी गांधीवाद और गांधोवादी

जब भी समाज में कोई विचारक गंभीर विचार मंथन के बाद कुछ निष्कर्ष निकालता है तो वह निष्कर्ष समाज क प्रचलित मान्यताओं से कुछ भिन्न होता है यदि उक्त निष्कर्ष समाज क तात्कालिक समस्याओं के समाधान में निर्णायक परिणाम देता है। तो उक्त विचारक महापुरूष बन जाता है। उक्त महापरूष के निष्कर्षो को सामान्य लोग बिना विचार किये ही स्वीकार करने लग जाते है। विचारक से महापुरूष बनने तक के बीच के कालखंड में विचारों को समाज तक पहचाने के लिये एक संगठन की आवश्यकता होती है। ऐसा संगठन उक्त विचारक के जीवन काल में भी बन सकता है और जीवन पश्चात भी। संगठन विचारों को समाज तक पहुचाने की व्यवस्था करता है और जब उक्त विचार सफल प्रमाणित हो जाता है। तब उक्त विचार को धीरे धीरे रूढ बनाकर उन पर कुन्डली मारकर बैठ जाता है। इस तरह संगठन विचारों की कब्र होती है। संगठन क माध्यम से विचार सुरक्षित हो जाते है अदृश्य हो जाते है दीर्घकालिक हो जाते हैं। अनुपयोगी हो जाते ह। संगठन विचारों को पुनर्विचार से दूर कर देते है। तात्कालिक समस्याओं के समाधान के लिये जब कोई नया विचार सामने आता है तो उक्त संगठन के महापुरूष को आक्रमण झेलने पडे
थे। प्रत्येक संगठन अपने महापरूष के साथ किये गये दुर्व्यवहार को अत्याचार घोषित करता है जबकि वह स्वयं भी आगे वाले विचारकों के साथ बिल्कुल वैसा ही अत्याचार करना शुरू कर देता है।

महात्मागांधी ने गुलाम भारत के स्वतंत्रता संग्राम को एक नई दिशा दी उन्हाने इस संग्राम के लिये सत्य और अहिंसा को मुख्य मार्ग घोषित किया विदेशी वस्तु बहिष्कार उनका सहायक मार्ग था। धार्मिक सामाजिक जातीय एकता उक्त संग्राम के उपमार्ग है चरखा खादी और गांधी टोपो उक्त संग्राम की पहचान स्वरूप थे लक्ष्य सिर्फ एक था बिल्कुल स्पष्ट था और सर्वमान्य था राष्टोय स्वराज्य। स्वराज्य के लिये उन्होने मार्ग सहायक मार्ग उपमार्ग सहायक उपमार्ग आदि तय किये और तदनुसार ही वे इन मार्गो की उपयोगिता भी मानते थे। गांधी जी ने सत्य और अहिसा से कभी समझौता नहीं किया क्योकि यह उनका मुख्य मार्ग था। चरखा खादी गांधी टोपी से वे समझौते के लिय तैयार थे। यदि कोई व्यक्ति भिन्न वस्त्र टोपी या भिन्न संगठन वाला भी हो ता वे उसका बहिष्कार नहीं करते थे गांधी के आन्दोलन में सब प्रकार के लोग शामिल थे चाहे वे गांधी जी के बताये कुछ उप मार्गो से सहमत ही क्यो न हो गांधी जी ने अपने जीवन मे किसी का अधूत नही माना क्योंकि उनके विचारों में अधूत कार्य होता है कर्ता नहीं उन्होने नारा दिया पाप से घृणा करो पापो से नहीं। गांधी जी ऐसे ऐसे बोमारों की भी सेवा करते थे जिनकी बीमारी ठीक करने का भरसक प्रयास किया।
गांधीजी के बाद उनके विचारों ने गांधोवाद का स्वरूप ग्रहण किया। गांधीवाद की एक सर्वमान्य परिभाषा थी तत्कालीन समस्याआं का सत्य और अहिसा के मार्ग से समाधान का प्रयत्न। इसमें तत्कालीन समस्याओ का समाधान लक्ष्य था और सत्य अहिंसा मार्ग। गांधी के बाद गांधीवाद विचारों से दूर होने लगा और धीरे धीरे विचारों से हटकर संस्कार बन गया। अब उसकी परिभाषा बदल गई सत्य और अहिंसा के आधार पर ही समस्याओं के समाधान का प्रयत्न सत्य और अहिसा लक्ष्य बन गया समाधान गौण। समस्याओं की पहचान के लिये तात्कालिक परिस्थितियों के साथ कोई तालमेल नही रहा गांधीवाद धीरे धीरे गांधी से दूर हो गया।

ऐसे अधिकांश संस्कार प्रधान गांधीवाद से प्रभावित लोगों का समूह बन गांधीवादी संस्कार इसमें शामिल अधिकांश लोग बहुत त्यागी चरित्रवान पद और धन के प्रलोभन से दूर उच्च संस्कारवान है किन्तु उनमें विचार एवं चिन्तन शक्ति का सर्वथा अभाव है। वे समस्याओ का ठीक ठीक आकलन नहीं कर पाते। वे समस्याओं के समाधान के लिये अहिंसा को शस्त्र के रूप में प्रयोग न करके अपने पलायन की ढाल के रूप में उपयोग करते है। वे विपरित विचार वालों से तर्क नहीं कर सकते। विचार मंथन इनके आचरण में द्र दूर तक नहीं है।

गांधी विपरीत विचार रखन वाले को अधूत नहीं मानते थे गांधीवादी उन्हें अधूत मानकर धृणा करते है। गांधी जी स्वयं को इतना दृढ मानते थे कि उन पर असत्य के प्रभावी होने का कोई भय नहीं था परिणाम स्वरूप से सबके बीच अपनी बात रखने का साहब करते थे। गांधीवादी इतने भयभीत है। कि वे दसरों के विचारों से प्रभावित होने के डर से उनसे दूर भागते है। गांधी जी वैचारिक विस्तर के पक्षधर थे गांधीवाद संगठन की सुरक्षा में ही परेशान रहते है। गांधी जो इस्लाम के खतरे को भली भांति समझते हुए भी एक रणनीतियों के अन्तर्गत उनसे समझौता करते थे। गांधीवादी इस्लाम के खतरे को न समझते है न समझना चाहते है गांधी जी पूरी तरह धर्मनिरपेक्ष थे। वे साम्प्रदायिकता को कभी स्वीकार नहों करते थे गांधीवादी धर्मरिपेक्षता का एक ही अर्थ समझते है। संघ का विराध और मुस्लिम तुष्टीकरण। गांधी जी साम्यवाद को घातक विचार मानते थे गांधीवादी साम्यवाद को समझते ही नहीं। मुझे तो आश्चर्य होता है कि हिंसा का सैद्धान्तिक रूप से भी और व्यावहारिक रूप से भी समर्थन करने वाले साम्यवादियों और आतंकवादी मुसलमानों के विरूद्ध गांधीवादियों का न कभी प्रत्यक्ष विरोध दर्ज होता है। न परोक्ष किन्तु यदि प्रशासन इनके विरूद्ध कोई कठोर कदम उठाता है तो गांधीवाद अवश्य ही विरोध में हल्ला करना शुरू कर देते है। गांधी जी सरकरी कारण के बिल्कुल विरूद्ध थे और सामाजीकरण के पक्षधर थे गांधीवादी समाजीकरण के पक्षधर थे गांधीवादी सामाजिकरण को समझते ही नहीं वे तो व्यापारीकरण के स्थान पर सरकारीकरण की वकालत तक करते है। गांधी जी निजीकरण के स्थान पर सामाजिकरण चाहते थे। गांधीवादी निजीकरण को विरोध तो करते थे। गांधीवादी सरकारी कारण का या तो समझते नहीं या उनके संस्कार उनकी समझदारी में बाधक है।

आज देश में ग्यारह समस्याएँ बढ रहीं है। भारत के सभी राजनोतिक दल इस समस्याए के समाधान की अपेक्षा दस प्रकार के नाटकों में सलग्न है। इन राजनैतिक दला की नीतियाँ तो गलत है ही नीयत भी गलत है। साम्यवादी भी अपनी राजनैतिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिये इन्हीं स नाटकों को प्रोत्साहित करते रहते हैं। संघ परिवार की नीयत अर्ध राजनैतिक है। उसकी नीतियाँ साम्प्रदायिकता से भी प्रभावित है और पूँजीवाद से भी। परिणाम स्वरूप वे सात समस्याओं के तो समाधान का चिन्ता करते है किन्तु आर्थिक असमानता और श्रम शोषण पर नियंत्रण की वे कभी नहीं सोचते। मिलावट की रोकथाम के विषय में भी वे चुप ही रहते है। क्योंकि मिलावट और व्यापार का चोली दामन का संबंध बन गया है। सबसे दुखद है कि संघ परिवार साम्प्रदायिक के विषय में भी स्पष्ट नहीं है। उसके अनेक कार्य तो साम्प्रदायिकता को मजबूत करने मे ही सहायक होते है। गांधीवादियों का वर्ग ही एक ऐसी जमात है जो राजनीति से संबंध नही रखती किन्तु हमारा दुर्भाग्य है कि इनकी नीयत ठीक होते हुए भी नीतियाँ देश की सभी ग्यारह समस्याओं के विस्तार में सहायक हो रही है। राजनीतिज्ञ जानबुझकर नाटक करते रहते हैं और गांधी वादी अनजाने में उसके पात्र बन जाते हैं मेरा यह आरोप अत्यन्त ही गभीर है और हो सकता ह कि यह गलत ही हा किन्तु बहस तक मैने जो समझा वह ऐसा ही है और यदि इस संबंध में कोई बहस छिडती है तो मैं उसका स्वागत ही करूँगा।

मैने गांधी को बहुत सुना और समझा है। गांधीवाद को भी प्रयोग करके पूरी तरह सफल होता देखा है और गांधीवादियों से भी खूब चर्चा की है। गांधीवादी तर्क से बहुत भागते ह वे स्वयं को अन्य लोगों से अधिक श्रेष्ठ और आचरणवान मानकर दूसरों से घृणा करते है किसी भी मामले मे अपनी बात की हा नही कहते बल्कि जो भी कहते है। उसमें गांधी विनोबा जयप्रकाश का नाम जोड बिना न एक लाईन लिख सकते है। न बोल सकते हैं। न भाषण दे सकते हं। उन्होने गांधी विनाबा जयप्रकाश को कभी समझने का प्रयास किया हो तब तो वे उनकी बात को अपने शब्दों में वर्तमान स्थितियों के साथ जोडकर कह पाते। उन्ह तो सभी समस्याओं के समाधान के रूप में गांधी विनोबा जयप्रकाश के उस समय की परिस्थियों में कहे गये। शब्दों के आधार पर बने उनके संस्कार ही पर्याप्त दिखते है और यही आज की सबसे बडो समस्या है अधिकांश गांधीवादी इन बातों को समझते भी है और गुप्त रूप से चर्चा भी करते है। किन्तु संस्कारित गांधीवादी के समक्ष वैचारिक गांधीवादी हमेशा भयभीत रहते ह।

मैं महसूस करता हू की स्वतंत्रता के बाद में जिन ग्यारह समस्याओं का विस्तार हुआ है उसका समाधान सिर्फ गांधीवाद के पास है। न तो इसका समाधान पूंजीवाद के पास है न ही साम्यवाद के पास ये दोनों ही या तो समस्याओं को बढा सकते ह या उसके लाभ उठा सकते हैं। गांधीवाद ही इनके समाधान का मार्ग निकाल सकता है। और आज कि समस्याओं के समाधान के लिए निमित्त गांधीवाद को कोई गांधी ही परिभाषित कर सकता ह। गांधीवादी नहीं। क्योंकि गांधी दाण्डी यात्रा समस्या के समाधान के लिये करते थे और यह गांधी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिए नकल करते है। गांधी जी के वस्त्र किसी पूर्व महापुरूष की नकल न होकर भारत के आम निवासियों के दुख दर्द की असल थे ये लोक नकल करके गांधी चश्मा, उनके कपड़ और उनकी दाण्डी यात्रा करके गांधी बनना चाहते है। ये गांधीवाद को कभी समझा वह गांधीवाद को क्या समझेगा। इस लिए आज भारत को एक गांधी की जरूरत है एक ऐसे गांधी की जो अपना नाम गांधी रखे या काई और वह चाहे खादी पहने या कुछ और वह दाण्डी यात्रा करे या कोई और यात्रा करे यह महत्वपूर्ण नही महत्वपूर्ण यह है कि वह गांधी सत्य और अहिंसा का डण्डा ओर झण्डा उठाकर ग्यारह समस्याओं के समाधान के लिए

निकल पड और भारत की सभी हिंसक साम्प्रदायिक जातीय स्वार्थान्ध राजनैतिक शक्तियों को एक साथ चुनैती देकर घोषणा करें। कि अब तक हमने बहुत सहा अब सहेगें नही हम चुप रहेंगे नहीं झंडा उठा लेगे हम।

म जानता हूँ कि स्थापित संगठन ऐस विचारों को बदास्त नही कर सकते यदि किसी गांधी ने आकर गाधीवाद को इस ढंग से परिभाषित किया तो उक्त विचारक गांधी को सबसे पहले टकराव संस्कारित गांधीवादियों का ही झलना पडेगा और वह टकराव किसी भी सीमा तक जा सकता है यदि गांधी ने इस संकारित गांधीवादियों को समझाकर कोई मार्ग निकाल लिया तब तो उसके जीते जी ग्यारह समस्याओं का समाधान का मार्ग निकल सकता ह अन्यथा उनका भी वही हाल होगा जो इशुमसीह का हुआ गांधी का हुआ और तब उनके बाद उनके नाम से एक नया संगठन नयावाद खडा होगा औंर दुनिया में वादों का एक नया वादा जुडकर वाद विवाद में सहायक बन जायगा।

पत्रोत्तर

1. श्री कृष्णदेव सिंह जी परियार म.उ. उत्तर प्रदेश,

प्रश्न –1. ज्ञानतत्व अंक नवासी पृष्ठ दस के अनुसार आप एक सर्वोदयी मित्र की कोलाकोला संबंधी अनावश्यक जिद के समक्ष झुक गये। इस तरह आपके झुक जाने से आपकी कार्य प्रणाली के संबंध में समाज में क्या संदेश जायगा? हम इसका क्या अर्थ निकाले?

2. पृष्ठ ग्यारह के 1 में आपकी जिज्ञासा उचित नहीं क्योकि वर्तमान समय में कोई भी भारतीय कंपनी शीतल पेय नहीं बनाती है।

3. पृष्ठ पचासी पर आपने व्यवस्था परिवर्तन में राजनीति की भूमिका को बिल्कुल ही नकार दिया है। मै आपसे बिल्कुल असहमत हूँ। व्यवस्था परिवर्तन के लिये राजनीति से अलग कोई अन्य मार्ग है ही नहीं जयप्रकाश सहित अब तक हुए व्यवस्था परिवर्तन का एक भी ऐसा आन्दोलन नही हुआ जो राजनीतिक न रहा हो।

4. पृष्ठ पैंतीस पर आपने आपराधिक चरित्र संबधी चर्चा में मुसलमानों के प्रतिशत का हिन्दुओं के समक्ष मानकर भूल की है। सच्चाई यह है कि मुसलमान अन्यों की अपेक्षा अधिक अपराध करते है। इसी तरह आर्थिक समाजिक रूप से कमजोर लोग कम अपराध करते है। यह भी सोच गलत है। अधिकांश दुर्दान्त अपराधी इसी पृष्ठभूमि के होते है।

उत्तर –आपका पत्र मिला आप हमारे चालीस उन लोगों की सूची में शामिल है जो पढने के साथ साथ लिखते भी है। धीरे धीरे ऐसे विद्वानों की संख्या बढने से मुझे विचार मंथन में सुविधा होती है। मैं इस निमित्त आप सबका आभारी हूँ।

1. एक सर्वोदयी मित्र की अनावश्यक जिद के समक्ष झुक जाने से आपको मेरे विषय में अर्थ निकालना चाहिए कि मै महत्वपूर्ण बातों को छोडकर अन्य व्यावहारिक बातों पर सामजस्य करना चाहता हूँ। बहुत से लोग बहुत छोटी छोटी बातों में विवाद करने लगते है। या अड जाते है किन्तु मेरी वैसी आदत नहीं यदि मेरी किसी वैसे मित्र से भेंट हो जावे तब भी मैं व्यर्थ का विवाद नहीं करता।

2. कोई भारतीय कम्पनी कोई शीतल पेय नही बनाती यह मुझे पता नहीं था। अच्छा किया जो आपने यह जानकारी दे दीं।

3. मेरे राजनीति परहेज और आपकी राजनीतिक सक्रियता के भावार्थ में कोई अन्तर नही है। आप जिसे राजनीतिक कह रहे है उसे ही मैं समाजनीति कह रहा हूँ। मेरे विचार में ज्योंही राजनतिक व्यवस्था विफल होती है और उक्त राजनैतिक व्यवस्था के स्थान पर जिस दूसरी राजनैतिक व्यवस्था की स्थापना होनी है वह कार्य राजनीति शास्त्र का न होकर समाजशास्त्र का हो जाता है यद्यपि परिवर्तन की प्रणालो भी राजनैतिक ही होती है और परिर्वतन का नारा दिया वह सिर्फ सत्ता परिवर्तन तक ही सीमित रहने से उसका स्वरूप राजनैतिक ही रहा। अतः हमें इस विवाद में ज्यादा बहस में नही पडना चाहिये कि व्यवस्था परिवर्तन का स्वरूप समाजिक होता है कि राजनैतिक। हमारा लक्ष्य व्यवस्था परिर्वतन है चाहे कोई उसे सामाजिक कहे अथवा राजनैतिक।

4. मेरी अपनी सोच यह है कि अपराधां से धर्म का संबंध नहीं। इसी तरह मेरी सोच यह है कि सक्षम लोग अधिक अपराध करते है और गरीब या अक्षम कम। यह अलग बात है कि सक्षम लोग कम पकडे जाते है और आश्रय लोग अधिक। यदि आपका निष्कर्ष इसके विपरीत है तो मैं आपसे सहमत नहीं।

2. स्वामी मुक्तानंदजी, सर्वोदय, आश्रय, साधुबेला हरिद्वार

ज्ञान तत्व मिला। ज्ञानतत्व में प्रश्नोत्तर की प्रक्रिया बाधक है। मैं आपसे कभी प्रश्न नहीं करता किन्तु उत्तर देते है यह समझ में नही आता। मै तो सिर्फ अपने विचार देता हूँ जिन्हे आप प्रश्न समझ लेते है।

विकास कि वर्तमान परिभाषा समस्त मानव अधिकारों का हनन करती है। यह परिभाषा प्राकृतिक न्याय के भी विपरोत है। संसार की सभी राजनैतिक शक्तियां इस परिभाषा का पोषण और संरक्षण करती है। धर्म इसको आर्शीवाद देता है। प्रचार तंत्र इसे जन–जन तक पहुँचाता है। सेवातंत्र चार चांद लगाता है। अर्थ संग्रह की विकृति ने इसे जन्म दिया है। कानून बनाकर इस विकृति को कम करने का प्रयास किया जा सकता है इस अर्थ विकृति को अपरिग्रह की सांस्कतिक ज्योति से निर्मूल किया जा सकता है।

आप जानते है कि मैने नब्बे क दशक मे संविधान संशोधन का व्यापक अभियान चलाया था। इस संबंध में मेरी पुस्तक चर्चा का विषय भी बनी थी। किन्तु अब मै उससे हटकर आर्थिक साम्राज्यवाद उन्मूलन प्रयास में लग गया है।
आप इस विचार पर गंभीरता से विचार करें।

समीक्षा– प्रश्नोत्तर के विषय में आपका कथन ठीक है। मुझे प्रश्नोत्तर शीर्षक नहीं देना चाहिये था अब मैने प्रश्नोत्तर को बदलकर पत्रोत्तर कर दिया है। यह सच है कि आप जो विचार भेजते ह उनमें मैं शंका करता हूँ जिसे आप आगे पत्र म लिखते है। मंथन की यही प्रक्रिया होती है। अतः मने भूल मानकर संशोधन कर दिया है।

मेरे विचार में समस्याओं का कारण सिर्फ अर्थ संग्रह न होकर इससे साथ साथ राजनैतिक शक्ति संग्रह भी है। हमें राजनैतिक तथा आर्थिक दोनो शक्तियों के केन्दोयकरण पर समान चोट करनी होगी। अब तक यह भूल हुई है कि आर्थिक साम्राज्यवाद पर चोट करने के लिए राजनैतिक साम्राज्यवाद को प्रोत्साहित किया गया। परिणामस्वरूप आर्थिक साम्राज्यवाद पर ता चोट हुई नहीं राजनैतिक शक्ति अधिकांश संग्रह होती चली गई। अब हमें उक्त भूल को संशोधित करके दोनों पर एक साथ आक्रमण करना है। उपरिग्रह के विचार को मजबूत करने के लिए कानून सफल होगा यह मुझे नहीं जॅचता क्योंकि जिस देश मे कानून बनाने वालों की नीयत और नीतियों दोनों ही गलत हो वहां उन्हे और अधिकार देने की बात उचित नहीं होती। भारत की वर्तमान अनेक समस्याओं का कारण समाज का कमजोर हो कर राजनीति का लगातार मजबूत होना है। आपने ही कई बार बताया है कि पुराने समय के सामाजिक जीवन को सोसाईटी एक्ट बनाकर तोडने का षडयंत्र हुआ था। और उस कानून ने हमारे जीवन को तहस नहस किया। मेरे विचार में सामाजिक जीवन को तहस नहस करने वाला वह अकेला कानून नहीं है बल्कि अनेक कानून है। अत मेरा यह निष्कर्ष है कि कानून के माध्यम से सिर्फ अपराध नियंत्रण ही हो सकता है। यदि समाज निर्माण के लिए कानून का माध्यम बनाने का प्रयत्न हुए तो परिणाम वही होगे जो हो रहे है। मेरे विचार में जिन लोगों ने भी बाल विवाह दहेज प्रथा, छुआ–छूत, जातिप्रथा, महिला समानता आदि सामाजिक समस्याओं के समाधान के लिये कानून बनाने की वकालत की उनकी नीयत भल ही ठीक रही हो किन्तु नीतियां तो पूरी तरह गलत ही थी। इनकी ना समझी का ही परिणाम हुआ कि वकालत की उनकी नीयत भले ही ठीक रही हो किन्तु नीतियां तो पूरी तरह गलत ही थीं। इनकी ना समझी का ही परिणाम हुआ कि इस सामाजिक समस्याओं पर तो आंशिक नियंत्रण हो पाया किन्तु भ्रष्टाचार साम्प्रदायिकता, जातीय कटुता, चरित्र पतन, हिसा आदि अनेक अधिक गंभीर समस्याएँ बढती चली गई अपरिग्रह के लिए भी कानूनी प्रयास का परिणाम घातक ही होगा।

संविधान संशोधन पर जब आप काम कर रहे थे। तब मैं इस विषय पर नही सोच पाया था। अब परिस्थितियाँ बदल गई है। उस समय संविधान संशोधन के पक्ष में वैसा वातावरण नही बन पाया था। इसलिए आपके प्रयत्न सफल नहीं हो सके। किन्तु कारण नहीं है कि जो कार्य गुरू ना कर पाये वह शिष्य भी नही कर सकेगा। आवश्यक है आपके मार्ग दर्शन की और वह मुझे आपके पुराने विचारों के रूप में उपलब्ध है। अतः चिन्ता का कोई कारण नहीं है।

3. श्री रवीन्द्र सिंह तोमर, संवाद सरोवर ए. 6 विवेक कॉलोनी गुना म.प्र. 473001

ज्ञान तत्व मिलें। 1. मेरे विचार में संघ एक मातृ संस्था है जो भिन्न विचारों वाली संस्थाओं और विचारधाराओ को मृत प्रायः बनाने में सदा संलग्न रहती है। सघ इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए नित नये संगठन बनाता है। भाजपा भी ऐसे ही संगठनों मे से एक है। संघ की एक विशिष्ट कार्य प्रणाली है। वहॉ तर्क कि कोई गुनजाईस नही होती है बहस से बचना और दूसरों पर उगली उठाना इनका स्वभाव होता है।

2. आपके ज्ञानत्तव के किसी भी अंक में अर्थनीति पर चर्चा नही होती। आपका एक लेख अर्थनीति पर भी आना चाहिए। जिससे विचार मंथन को गति मिल सकें।

3. धनंजय को इस लिए फांसी हुई कि वह गरीब था। यदि वह गरीब नहीं होता तो वह फांसी से बच जाता। इसी तरह जाहिरा भी गरीबी के कारण ही बयान से पलट गई अन्यथा उसे भी अवश्य ही न्याय मिलता। मेरे विचार में धनंजय और जाहिरा को न्याय न मिलने का कारण उनकी गरीबी थी।

4. अभी अमेरीका ने गुजरात के मुख्यमंत्री नरेन्द्रमोदी का वीसा रद्द कर दिया। हिंसा के समर्थको ने अमरिका के विरूद्ध स्वाभिमान रैली निकालने का प्रयत्न किया। आपका इस संबंध में क्या मत है?

5. भारत में गरीबों के शोषण के उद्देश्य से उपभोक्ता संस्कृति का लागातार विस्तार किया जा रहा है।

उत्तर– आपका बारह पृष्ठो का पत्र मिला। बीस पचीस मुद्दों पर चर्चा थी। उनमें से पांच चुन कर मैने लिखा है। पूरे पत्र को पढकर यह स्पष्ट होता है कि आप संघ विरोधीं गुट की विचारधारा के संवाहक दिखते है। आपके प्रत्येक पत्र में संघ, मोदी ,गरीबी, उपभोक्ता संस्कृति अमेरिका की चर्चा तो होती है किन्तु कश्मीरी आंतकवाद, आंध्र का नक्सलवाद बिहार का जंगलराज आदि की चर्चा नहीं। मेरी इच्छा थी की किसी निश्चित विचारधारा के वकील बनने की अपेक्षा स्वतंत्र विचारधारा का अधिक महत्व भी है और आवश्यकता भी फिर भी मैं आपके पांच प्रश्नों पर अपनी सोच लिख रहा हूँ।

1. आपके संघ के जिस चरित्र और कार्यप्रणाली का वर्णन किया है वह सही है। मैं भी ऐसा ही मानता हूँ। किन्तु इसके साथ साथ मेरा अनुभव यह है कि साम्यवादी चरित्र कार्यप्रणाली भी ऐसी ही है। दोनों में कोई अन्तर नहीं है। आप वामपंथी कार्यप्रणाली की भी विवेचना करते तो अच्छा होता।

2. आपकी यह सोच पूरी तरह से गलत है। ज्ञानतत्व सरसठ तो पूरा का पूरा अंक ही आर्थिक समस्याएँ और समाधान शीर्षक से गया था। अनेक अंको में कर प्रणाली आर्थिक असमानता श्रम शोषण पर प्रश्नोत्तर होते है। ज्ञान तत्व के पिछले अंक में एक लेख श्रम के संबंध में गया है। मैंने उक्त लेख में यह निष्कर्ष निकाला है कि पूँजीवाद ने श्रम शोषण के लिए धन प्रधान संस्कृति का विकास किया और साम्यवाद ने श्रम शोषण के लिये बुद्धि प्रधान संस्कृति को आगे बढाया। श्रम शोषण के लिये चार बातों पर मुख्य जोर दिया जाता है।

1. कृत्रिम उर्जा मूल्य नियंत्रण 2. न्यूनतम श्रम मूल्य में शासकीय वृद्धि 3. शिक्षित बेरोजगारी उन्मूलन के प्रयास 4. जातिय आरक्षण। आपसे निवेदन है कि आप उस पर अपने विचार लिखें। मैंने कई बार अपने पाठकों से पूछा है कि भारत की साईकिल पर 250 रूपये कर लगा कर रसोई गैस को सबसीडी देने की वकालत करने में वामपंथी पीछे है न दक्षिपंथी। साम्यवादी और भाजपाई मिलकर यह नीति चलाते है मेरे इन प्रश्नों का उत्तर कुछ संघ समर्थकों ने तो दिया कि यह बात उन्ह मालूम नहीं अथवा ऐसा होना गलत है। किन्तु किसी वामपंथी पाठक ने अब तक मेरे इस कथन पर एक शब्द भी नही लिखा। आपने भी नही। मैं जानना चाहता हूँ कि श्रम शोषण सम्बन्धी मेरे आरोप अत्यन्त गंभ्भीर किस्म के है।

वामपंथी पर कोई श्रमशोषण का अरोप लगावे तो तत्काल ही उसका उत्तर मिलना चाहिए किन्तु आर्थिक प्रश्नों के बदले में आप सबके पत्र मोदी और संघ परिवार तक आकर सिमट जाता है। तो मेरा दोष नही। मेरी इच्छा है कि आपलोग श्रमशोषण पर बहस आगे बढाईये तो मुझे बहुत खुशी होगी।

3. आपने लिखा कि धनंजय को फांसी इसलिए हुई कि वह गरीब था। यदि गरीबी के कारण उसके साथ अन्याय हुआ है तो भारत मे पचास करोड गरीब लोग निवास करते है। फिर उन पचास करोड को फांसी क्यों नही हुई। धनंजय यदि गरीब था तो समाज को न्याय मिला और धनंजय को फांसी हुई। यदि पूंजीपति होता तो वह छूट जाता और समाज के साथ अन्याय होता। विचारणीय प्रश्न यह है कि पूंजी के बल पर कोई अपराधी फांसी से बच न सके यह प्रयास किया जाये न कि यह कि गरीब अपराध करें तो फांसी से बच जावे। मेरे विचार में आपकी सोच न्याय के पक्ष में प्रयत्न के विपरीत समान अन्याय के पक्ष में है। अर्थात चूँकि पूँजीवाद बलात्कार करके भी फांसी से बच जाते है अत गरीब बलात्कारी को भी फांसी न हो। समाज को गरीब और अमीर जैसे वर्गो में बाटने की अपेक्षा सामाजिक और समाज विरोधी शोषण और शोषित कानून व्यवस्था का पालन करने वाले और कानून व्यवस्था तोडने वाले जैसे वर्गो में बांटना अधिक अच्छा है।

4. अभी अमेरीका ने गुजरात के मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी को अमेरिका प्रवेश की अनुमति देने से इन्कार कर दिया। इसके साथ ही अभी हमारे लोकसभा अध्यक्ष सोमनाथ चटर्जी को भी जांच संबंधी नियमों में ढोल न देने के कारण अपनी यात्रा रद्द करनी पडीं। दोनों प्रकरण यद्यपि भिन्न प्रकृति के ह। किन्त परिणाम दोनों के एक समान है कि पश्चिमी देश हमारे देश के जन प्रतिनिधि को अपने देश में नियमों से हटकर छूट देने हेतु सहमत नहीं। विदेशी व्यवहार पर मोदी भी चिल्ला रहे है और सोमनाथ जी भी। मेरे विचार में यह अमेरिका का अपना व्यवहार है। इस तदनुसार व्यवहार के लिए स्वतंत्रत ह

किन्तु इसमें चिल्लाने या विरोध प्रकट करने का तो कोई आधार नहीं। हमारी चिल्लाहट, झुंझलाहट या विरोध ही यह प्रमाणित करता है कि हम वहाँ जाने के लिए अधिक लालायित है। और वे हमें बुलाने में खास रूचि नहीं रखते है। मुझे तो इस चिल्लाहट में अपने लोगों की बेशर्मी ही दिखती है कि आमंत्रण देने वाला हम पर शर्त थोपे और हम उसके लिए हल्ला करे। मेरे विचार में नरेन्द्र मोदी और सोमनाथ जी को झुझलाने की अपेक्षा शालीनता पूर्वक जाने स इन्कार कर देना चाहिए था किन्तु ये लोग अमेरिका आदि देशों में जाने के लिए लालायित रहते है। बाधा आन पर राष्ट्रोय अपमान की दुहाई देना शुरू कर देते है।

वर्तमान समय में जो दो संघ समर्थक और सघ विरोधी गुट बने हुए वे नये–नये नाम और नई–नई संस्कृति पैदा करते है। उपभोक्ता संस्कृति भी एक ऐसा ही शब्द है जो इतना निगण और गंभीर अर्थ वाला है कि मेरी समझ से बाहर है। दोनों ही गुट भौतिक विकास कि लिये निरंतर प्रयत्नशील रहते ह और अर्थ प्रधान संस्कृति को दिन रात गाली भी देते रहते है। जब आप भौतिक विकास को ही विकास कहेगे समाज को गरीब और अमीर वर्गो में बांटकर समस्याओं का समाधान करेंगे तथा योग्यता का मापदण्ड धन मान कर चलेंगे तो संस्कृति को अर्थ प्रधान होने से कैसे रोक सकते ह। मैं नही समझ सका कि उपभोक्ताओं को वस्तुएँ उचित मूल्य पर मिलें। उपभोक्ताओं को न्याय मिले जैसे आन्दोलनों में सक्रिय लोग भी उपभोक्तावाद का रोना क्यों रोना शुरू कर देते है। मेरा आपसे निवेदन है कि समाज को अनावश्यक वर्गो में बांटने की अपेक्षा प्रवृति के आधार पर बंटने का मार्ग प्रशस्त करें। यदि श्रम की मांग बटेगी तो उपभोक्ता संस्कृति कोई समस्या नही रहेगी। अनावश्यक प्रयत्न बंद करके सिर्फ एक प्रयत्न करें कि सत्ता और अथ का विकेन्द्रीयकरण हो इतना ही प्रयत्न पर्याप्त होगा।

6. श्री जय किशन धनवाद झारखंड

आप धर्म के विषय में जितना विचार रख रहे है। उतना ही स्पष्ट आर्थिक मामलों में भी रखने की आवश्यकता है। किन्तु आप आर्थिक मामलों में भी रखने की आवश्यकता है। किन्तु आप आर्थिक मामलों में कुछ दबी चर्चा रखते है। आज सरकारीकरण सारी आर्थिक समस्याओं की जड है इसे स्वार्थी तत्वों ने छदम नाम देकर राष्ट्रीयकरण कहना शुरू कर दिया है। मैं चाहता हूँ कि इस मुद्दे पर भी खली बहस आयोजित हो।

उत्तर– यह सच है कि अर्थनीति पर ज्ञानतत्व में चर्चा कम होती है। इसमें मेरी गलती नहीं है सामान्य लोग तो अर्थ नीति पर कोई प्रश्न नही करते और विशेष लोग तर्क विर्तक से दूर भागते ह। अर्थनीति में दा ही मार्ग अब तक दिखाई देते हैं। सरकारीकरण और व्यापारीकरण। दोनों के अपने अपने पृथक पृथक गण दोष है तीसरा मार्ग स्थानीयकरण या सामाजीकरण हो सकता है। जिस पर और गंभीर विचार की आवश्यकता है। पन्द्रह वर्ष पूर्व सरकारें सरकारीकरण की पक्षधर थी और समाज सरकारीकरण से मुक्ति के पक्ष में। अब सरकारें सरकारीकरण को हटाकर व्यापारीकरण के पक्ष मे हो गई है। वामपंथी संगठन पूरी तरह व्यापारीकरण के पक्ष में। अब सरकारें सरकारीकरण को हटाकर व्यापारोकरण के पक्ष में हो गई। वामपंथी संगठन पूरी तरह व्यापारीकरण के विरूद्ध है और सरकारी करण के पक्षधर है। दक्षिणपंथी दल कैसी अर्थनीति चाहते है। यह उन्हें खुद पता नही। स्वदेशी के नाम पर कुछ भी लिखना बोलना उनका स्वभाव है। समाज भ्रमित है। अम्बिकापुर आप आये थे। सरकारीकरण के विरूद्ध स्पष्ट विचार रखने वाले पूरे सम्मेलन में आप अकेले थे। अन्य सारे ही लोग इस संबंध मे अस्पष्ट थे। मेरे समक्ष यही संकट है। वामपंथियों के पास अभी असत्य थे। मेरे समक्ष यही संकट है। वामपंथियों के पास अभी असत्य को एक हजार बार बोलकर और लिखकर सत्य प्रमाणित करने लायक संगठन है। साहित्य के क्षेत्र में उनकी मजबूर जातियां बनी हुई है। दक्षिण पंथी धार्मिक सामाजिक मामलों में तो वामपंथियों के मुकाबले सक्षम ह। ये लोग भी असत्य को तीन चार सौ बार बोलकर और लिखकर सत्य बना देते हैं आर्थिक मामलों में दक्षिणपंथी प्रचार में अभी कमजोर है। हमारे पास अभी इतनी भी ताकत नहीं कि हम सत्य को दो बार भी बोलकर और लिखकर असत्य को चुनौती दे सके। यही संकट ह। किन्तु यह संकट दूर हो रहा है। आप कुछ सक्रिय हो पाते तो आर्थिक चर्चा आगे बढ पाती। आर्थिक मामलों में आप ज्ञानतत्व के लिये तथा ज्ञान तत्व के विचारों पर टिप्पणी करना शुरू करिये तो मेरा चिन्तन पक्ष कुछ मजबूत होगा।

श्री रोहिताश खनगवाल 369/2 देवीनगर गोहाना, सोनीपत, हरियाणा, 131301,

ज्ञान तत्व अंक नवासी पृष्ट पैंतीस से उन्चालीस क बीच आपने जातीय आरक्षण के बिल्कुल अनावश्यक माना है आपने यह तो माना है कि समाज में जिन जाति और वर्ग की सामाजिक आर्थिक स्थिति मजबूत होती है। वे अधिक अपराध करते है किन्तु आप आगे लिखते लिखते फिसल गये। जब सामाजिक आर्थिक दृष्टि से मजबूर जातियां अधिक अपराध करती है ता स्वाभाविक निष्कर्ष है कि सवर्ण जातियां अधिक करती है। प्रत्यक्ष दिखता है कि यदि दलित पुरूष सवण स्त्री से संबध बनाये तो दण्डित पीडित और विपरीत हो तो सवर्ण पुरूष सम्मानित या क्षम्य हो जाता है। दो तरह के व्यवहारों का सिर्फ एक ही आधार होता है। उँचा या दलित जाति। जातीय आरक्षण तो कुछ वर्ष पूर्व भारतीय संविधान ने लागू किया है। किन्तु ब्राह्मणों ने तो स्वयं को श्रेष्ठ घोषित कर दिया और हजारों वर्षो से अपनी इस दूषित व्यवस्था का लाभ उठा रहे है। आपके विचार में स्वतंत्रता के समय दलित नेताओं ने जल्दबाजी में आरक्षण की व्यवस्था कराई। आपका यह कथन गलत है। उस समय दलित के साथ जैसा अमानवीय व्यवहार हाता था वह हदय विदारक था। स्वामी

दयानन्द ने जब ऐसे अत्याचारों के विरूद्ध आवाज उठाई तो आठ प्रतिशत ही आदिवासी दलित उपर उठ सके ह। एक सर्वेक्षण के अनुसार अगले पचास वर्षो में इन आठ प्रतिशत की संख्या बढकर दस हो सकती है किन्तु दस से उपर होने के कोई लक्षण नहीं है।

एक सम्मानित व्यक्ति बोमार था। परिवार के ही एक चालाक सदस्य ने उक्त बीमारी को दान पुण्य की सलाह दी उस चालाक ने दान पुण्य के नाम पर ऐसा नाटक खडा किया कि परिवार के अन्य लोग हतप्रभ भी थे और चुप भी। यदि कोई कहता कि बीमार का इलाज कराना चाहिए तो वह व्यक्ति उक्त बीमारी की ऐसी मनोदशा का वर्णन करता कि सब चुप हो जाते। धीरे धीरे उक्त चालाक व्यक्ति ने नगर के एक पण्डित के साथ षडयंत्र करके सारा घर खाली कर दिया और परिवार के सभी सदस्य हाथ मलते रह गये।
समाज में दलित आदिवासी शोषित रहें है। उनके साथ अत्याचार हुआ है। ये दोनों बातें सच भी है और स्वीकार्य भी। आप इस संबंध में चाहे जितना विस्तृत और नाटकीय प्रस्तुति करें वह आवश्यक नहीं क्योंकि वह मान्य हैं। जिस प्रश्न पर विचार मंथन होना है वह यह है कि दलितों आदिवासियों का अधिक लाभ श्रम मूल्य वृद्धि म हैं या आरक्षण में दलित आदिवासियों का नब्बे प्रतिशत श्रमजीवी है और दस प्रतिशत बुद्धिजीवीं। सवर्णो का नब्बे प्रतिशत बुद्धिजीवी है और दस प्रतिशत श्रमजीवी। दस प्रतिशत दलित आदिवासी बुद्धिजीवी ने अपने व्यक्तिगत स्वार्थ के लिये बुद्धिजीवी कार्यो में अपना आरक्षण करा लिया और स्वार्थ के लिये बुद्धिजीवी काया में अपना आरक्षण करा लिया और सवर्ण बुद्धिजीवियों के साथ मिलकर अधिक से अधिक सुविधाएँ बटोरने लगे। स्वतंत्रता के समय सरकारी कर्मचारियों के वेतन भत्ते श्रमिको के श्रय मूल्य की अपेक्षा इतने अधिक नही थे जितने आज है। मंत्रियों की सुख सुविधा का भी यही हाल है। इन सरकारी कर्मचारियों और मंत्री विधायकों को अपने वेतन भत्ते से अधिक आय अन्य साधनों से भी होती है जबकि श्रमिकों को उनके श्रममूल्य से भी बहुत कम मिल पाता है। इन बुद्धिजीवियों ने श्रमजीवियों को धोखा देने के लिये नकली श्रममूल्य घाषित किया हुआ है जबकि मिलता उससे बहुत कम है। यदि सन सैंतालीस में ही बुद्धिजीवी दलित आदिवासी और बुद्धिजीवी सवर्णो को इस योजना को ठीक से समझा गया होता तो जातीय आरक्षरण के स्थान पर श्रम मूल्य बुद्धि की योजना पर काम शुरू होता तब आज यह हालत नहीं होती।
आप विचार करिये कि यदि सरकारी कमचारियों के वेतन भत्ते बढते है तो कोई विराध नहीं होता मंत्री विधायक मनमानी सुविधाएँ इकट्ठी कर रहे ह तो कोई हल्ला नहीं होता लेकिन यदि इन कर्मचारियों के वेतन भत्तों में काई कटौती हो तो सारा बुद्धिजीवी भारत आसमान सर पर उठा लेता है क्यों? की क्या ये लोग श्रमजीवियों की अपेक्षा कुछ अधिक मानवीय है क्या इन दलित आदिवासियों के पूर्वजो ने अन्य श्रमजीवी दलित आदिवासियों के पूर्वजों से अधिक कष्ट और अपमान सहे थे? शायद नहीं फिर ये आठ प्रतिशत लोग शेष दलित आदिवासियों के अपमान अत्याचार का लाभ उठाकर नाटक कर रहे है। मैं तो किसी भी प्रकार के आरक्षण को समस्या का समाधान नहीं मानता। आरक्षण जितना समाधान करता है उससे कई गुना अधिक समस्याएँ पैदा करता है। फिर भी यदि आरक्षण ही करना है तो इन रोजगार धधो का पूरी तरह श्रम आरक्षित कर दीजिये जो हाथ से किये जा सकते ह। पूरी तरह मशीन के ऐसे प्रवेश को रोक दीजिये कि श्रम की मांग बढगी। श्रम का मूल्य बढेगा और नब्बे प्रतिशत श्रमजीवी दलित आदिवासियों के जीवन में बहुत परिर्वतन आ जायगा। ऐसा करके जातीय आरक्षण समाप्त कर दीजिये। मैं जानता हूँ कि वर्तमान आरक्षण का लाभ उठा रहे बुद्धिजीवी भी। सवर्ण बुद्धिजीवो आरक्षण समाप्त करना तो चाहेंगे पर बुद्धि का मूल्य घटाकर श्रम मूल्यबुद्धि का वे विरोध करेगे। दलित आदिवासी आरक्षरण समाप्ति का भी विरोध करेंगे और बुद्धि का मूल्य घटाकर श्रम मूल्यबुद्धि का वे विरोध करेंगे। दलित आदिवासी आरक्षण समाप्ति का भी विरोध करेंगे और बुद्धि का मूल्य घटाने का भी। श्री खनगवाल जी भी श्रम जीवी होते तो आरक्षण की इतनी वकालत नहीं करते जितनी कर रहे है। मेरा निवेदन है कि समस्या से लाभ उठाने की अपेक्षा समाधान के प्रयत्न अधिक आवश्यक है।

2. श्री महावीर सिंह जी पूर्व पुलिस उप अधीक्षक फैजपुर निनावा बागपत उत्तर प्रदेश।

आपके विषय में कुछ सुनसुनकर एक कल्पना की तस्वीर उभरती थी किन्तु मेरे ग्राहक बनते ही आपने ज्ञानतत्व के चार पांच अंक एक साथ भेज दिये। पढने पर तस्वीर साफ दिखने लगी है। मेरी पृष्ठभूमि सर्वोदय और आर्यसमाज से जुडो रही है। मैं स्वामी दयानन्द और महात्मा गांधी के विचारों से प्रभावित रहा। आपने ज्ञानतत्व के अंको में अनेक गंभीर विषयों पर अपने विचारों को प्रस्तुत किये किन्तु गांधी विनोबा और जयपकाश का तुलनात्मक विश्लेषण एक कठिन कार्य तथा जिसे अपने सरल शब्दों में अच्छे ढंग स प्रस्तुत किया मैं तो समझता हूँ कि सर्वोदय कर्यकर्ता इतनी गहराई तक विचार मंथन नहीं करते। यही कारण है कि सर्वोदय आग बढ नहीं पा रहा है।

आपने रामानुजगंज में जो शासन मुक्त व्यवस्था का सफल प्रयोग किया वह भी प्रशंसनीय है आपने ग्यारह समस्याएँ बहुत ठीक ढग से समझी है तथा राजनीति पर अंकुश हेतु जो तीन सूत्र तय किये उनसे मैं सहमत हूँ।

किन्तु मैं यह नहीं समझ पा रहा कि शासन मुक्त समाज में शोषण मुक्ति कैसे संभव ह जब तक वर्तमान प्जीवाद नव साम्राज्यवादी व्यवस्था नहीं बदलेगी तब तक वैश्वीकरण उदारीकरण निजीकरण सम्पूर्ण अथ व्यवस्था को पंगु बनाते रहेंगे। गांधी जी ने स्वदेशी के आधार पर विदेशी कम्पनी से टक्कर ली थी अब तो विदेशी कम्पनियों की बाढ सी आ गई है। आप प्रत्येक विषय पर गंभीर चिन्तन करते ह और बेहिचक टिप्पणी करते है। इस विषय पर गंभीर चिन्तन करते है। इस विषय पर भी आपके विचारों की प्रतिक्षा। मेरे विचार में गांधीजी श्रम प्रधान जीवन पद्धति शोषण मुक्ति का आधार मानते रहे और श्रम प्रधान जीवन पद्धति के लिये कृषि आधारित रोजगार ही मुख्य श्रोत बन सकता है। किन्तु वर्तमान व्यवस्था न कृषि आधारित रोजगार को प्रक्षय दे रही है न ही श्रम प्रधान जीवन पद्धति को। वह तो सिर्फ बुद्धि को और धन को महत्व दे रही है जिसका आधार है। कल कारखाने परिणाम हमारे सामने स्पष्ट है। यह कल कारखाना संस्कति सम्पूर्ण भारत की नस नस में इस तरह प्रवाहित की जा रही है कि आपका संविधान संशोधन अभियान कठिन दिखता है। फिर भी हमें निराश नहीं होना चाहिए अपनी अल्प क्षमता आपके सहयोग में समर्पित है।

उत्तर – आपने अपने मन की बात बहुत स्पष्ट और निश्चल मन से रखी है। अपराध और शोषण के फर्क को समझने की आवश्यकता है। अपराध की अनिवार्य शर्त होती है बलप्रयोग अथवा दुराब छिपाव शोषण में न बलप्रयोग होता है न दुराव छिपाव। शोषण शोषक द्धारा शोषित की सहमति से उसकी मजबूरी का लाभ उठाकर किया जाता है। शोषण अनैतिक होता है, अपराध नही शोषण समाजिक समस्या है कानूनी नहीं। शोषण न कभी कानून से रोका गया है न रोकना संभव है। जब भी शोषण रोकने में शासन ने पहल की पहला प्रयास मकान किराया कानून के रूप में सामने आया कुछ मकान मालिक किरायेदारों का शोषण करत थे। शासन ने कानून बनाया। अब किरायेदार मकान मकान मालिकों को शोषण करने लगे। अपराधों में बेतहाशा वृद्धि हुई। आम नागरिक के चरित्र में गिरावट आई। वर्तमान में महिला शोषण की रोकथाम हेतु शासन ने दहेज कानून बनाया दुष्परिणाम दिखने लगे है। मैने अपने जिले में एक सर्वेक्षण किया तो चौंकाने वाले तथ्य प्रकट हुए कि दहेज हत्या के आरोप में न्यायालय से सजा पा चुके आधे प्रकरण या ता झूठे थे। या अतिरंजित। विवाह के बाद होने वाले किसी भी विवाद में कन्या परिवार के अनेक लोग वर पक्ष के साथ सम्पूर्ण समाज भी दहेज हत्या मानकार हत्या प्रमाणित करने में जुट जाता है। अच्छे अच्छे विद्वान और ईमानदार न्यायाधीश भी ऐसे प्रकरणों में भावना में बहकर सत्य का गला घोट देते ह और वर पक्ष को किसी न किसी रूप में सजा देना न्याय और सामाजिक कार्य मानते है। दलित आदिवासी शोषण करने के लिए कुछ कानून बने है। आदिवासियों में उपस्थित ध्रूतों के लिये ये कानून शोषण का हथियार बन गये। अनेक उच्च्व अधिकारी भी अपने जाति हथियार का खुल कर प्रयोग करने लगे ह कार्यालयों तक में एसे अधिकरी सब को दबा कर प्रयोग करने व मंत्री तक को मैंने इन कानूनों के नाम पर झूठी रिपोर्ट करते देखा है। समाज के सभी वर्गो में अच्छे व बुरे लोग होते है। ऐस वर्ग प्रधान कानून की आवश्यकता नहीं है। कुल मिलाकर अपराध और चरित्र पतन में वृद्धि होती है। शोषण करने के लिये किसी भी प्रकार के विशेष कानून की आवश्यकता नहों है। शोषण शोषित की मजबूरी से लाभ उठाने का ही नाम होता है। आप शोषण की मजबूरी समाप्त करे दें तो शोषण रूक जायेगा। महिलाओं का शोषण रोकने हेतु सभी अन्य भेदकारी कानून समाप्त करके सिर्फ परिवार की परिभाषा बदलने को आवश्यकता है। परिवार को अभी न तो सैद्धांतिक मान्यता है और न ही संवैधानिक परिभाषा। उसकी वर्तमान प्रचलित परिभाषा को बदलकर सिर्फ यह लिख दें संयुक्त सम्पति और संयक्त उत्तरदायित्व के आधार पर एक साथ रहने हेतु सहमत व्यक्तियों का समूह। इतना संशोधन मात्र महिला शोषण उत्पीडन, आदि सभी समस्याओं के विरूद्ध हाइड्रोजन बम का काम करेगा। इसी तरह सभी प्रकार के आरक्षण श्रम मूल्य जाति शोषण के कानून आदि समाप्त कर दीजिए। सभी प्रकार के टैक्स भी खत्म कर दीजिएं सारा टेक्स सिर्फ कत्रिम उर्जा पर लगा दीजिए श्रम मूल्य बढ जायेगा कृषि आधारित रोजगार पनपने सब प्रकार के शोषण समाप्त हो जायेगा। शोषण को जीवित रखकर शोषण के नाम पर राजनीतिक रोटी सेंकने के कारण ही शोषण जीवित है अन्यथा यदि शासन शोषण रोकने हेतु प्रयास बद कर द और समाज को यह काम आसान हो जायेगा। आपने बहुराष्ट्रीय कंपनियों निजोकरण उदारीकरण आदि को शोषण का आधार माना है यह सब शोषण के आधार बिल्कुल नहीं है। यह सब शोषण के परिणाम है। शोषण के आधार है श्रम मूल्य वृद्धि को रोककर रखना। यदि समाज में श्रम की मांग बढ जावे तो उसका मूल्य भी बढ जायेगा और सम्मान भी एक षडयत्र के अन्तर्गत श्रम की मांग को कम करने की योजनाएँ बनाई जाती है। साम्यवादी इन योजनाओं को बनाने का नेतृत्व करते है और पूँजीवादी इन योजनाओं का समर्थन करते है। ये सभी बहुत लम्बे विषय ह। यदि और प्रतिकियाएँ आयेगी तो मैं ओर अधिक स्पष्ट कर सकूँगा मैं अपने अनुसंधान के आधार पर कह सकता हूँ कि श्रम शोषण सिर्फ साम्यवादियों का पूँजीवादियों के समर्थन से स्रनियोजित षडयंत्र है। जो समझते है कि ऐसा नह है वे मुझे आमंत्रित करें। मैं उनकी प्रायोजित बैठक में इस संबंध में विचार रख सकता हूँ या यदि वे पत्र लिखें तो मैं ज्ञान तत्व में उत्तर दे सकता हूँ। बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ निजी करण उदारीकरण आदि बहुत गभीर विषय है। अनेक मित्र तथा सहयोगी इन कामों से जुडे हुए ह। सर्वोदय के लोग तथा गोविन्दाचार्य जी से जुड ही है। मैं आप सब की भावनाओं के आधार पर इस विषय से अपने को दूर रखता हूँ। विषय बहुत संवेदनशील है और भ्रम निर्माण कर सकता है। अतः मैं इस विषय पर ओर आगे लिखना उचित नहीं समझता। फिर भी यदि भविष्य में आवश्यकता हुई तो इस विषय पर चर्चा की जा सकेगी।